Vijay Kumar Jha.
Asstt Prof
Deptt in History
V.S.J. College Rajnagar.

Degree Part I

Rise of Magadhan Empire.

गौतम बुद्ध के आगमन से पूर्व भारत में सोलह महाजनपदों की स्थापना हो चुकी थी बौद्ध ग्रंथ के अंगुत्तर निकाय में इसका स्पष्ट उल्लेख है - (i) कोशल, (ii) मगध, (iii) काशी (iv) वज्जि, (v) मल्ल (vi) चेदि, (vii) वत्स (viii) कुरु, (ix) पांचाल (x) मत्स्य, (xi) सूरसेन, (xii) अश्मक, (xiii) अवन्ती (xiv) अवन्ति, (xv) गान्धार, (xvi) कम्बोज। इन सोलह महाजनपद में चार शक्तिशाली राज्य थे जिसमें मगध अवन्ति, वत्स, कोशल इन चारों में संघर्ष हुआ और मगध साम्राज्य की अस्तित्व बनी रही।

मगध साम्राज्य की स्थापना में मुख्य रूप से तीन राजवंशों का योगदान था। ये राजवंश हर्यंक वंश, शिशुनाग वंश तथा नन्द वंश था। चेदि राज वसु के पुत्र बृहद्रथ ने गिरिव्रज को अपनी राजधानी बनाई तथा मगध पर स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। इस वंश को बृहद्रथ वंश कहा गया। उसका पुत्र जरासंध था जो महत्वाकांक्षी शासक था। इस वंश का अंतिम राजा रिपुंजय था जिसकी हत्या उसके मंत्री पुलिक ने कर दी। भट्टिय नामक सामन्त ने अपने पुत्र बिम्बसार को मगध के राजगद्दी पर बैठाया। कुछ विद्वान बिम्बसार को हर्यंक वंश का संस्थापक मानता है। किंतु बौद्ध ग्रंथ से स्पष्ट होता है कि हर्यंक वंश की स्थापना शिशुनाग वंश से पूर्व हुई थी अतः बिम्बसार शिशुनाग वंश का नहीं बल्कि हर्यंक वंश का संस्थापक था। बिम्बसार का शिशुनाग वंश से कोई सम्बन्ध नहीं था।

हर्यंक वंश! – महावंश के अनुसार बिम्बसार के पिता ने उन्हें 15 वर्ष के आयु में राजतिलक कर दिया। बिम्बसार एक प्रतिभाशाली व्यक्ति था और उसके राज्याभिषेक से ही मगध का उत्थान प्रारम्भ हुआ।

Scanned with Cam

बिम्बसार ने कौशल के राजा प्रसेनजीत से विवाह किया जिससे उसे काशी का राज्य प्राप्त हुआ। उसने पुनः लिच्छवी राजा चेतक के पुत्री चेल्लना से शादी किया तथा मद्र देश के राजा की लड़की खेमा से वैवाहिक संबंध कायम किया जिससे प्राप्त प्रदेश के तीन पर उसे विशाल मगध साम्राज्य कायम किया। उसने अवन्ति के राजा से मित्रता की तथा अंग राज्य पर विजय प्राप्त किया। वह प्रखर विजेता के साथ ही कुशल प्रशासक भी था। वह साम्राज्यवादी था तथा न्यायिक दृष्टि से उसका शासन अत्यन्त कठोर था। उसने शासन को कई भागों में बांटकर योग्य प्रशासक नियुक्त किया तथा उत्पादन का दशांश कर के रूप में स्वीकार किया। उसने यातायात एवं संचार व्यवस्था प्रदान की।

बिन्दुसार धर्म सहिष्णु था तथा बौद्ध धर्म अनुयायी था। किन्तु जैन धर्म में भी निष्ठा रखता था तथा अन्य धर्मों के प्रति भी उदार था। बिन्दुसार कि मृत्यु 439 ई० पू० में हो गई। पुराणों के अनुसार उसका शासन 28 वर्षों का था।

आजातशत्रु – अजातशत्रु के शासन काल में मगध साम्राज्य चरम पर पहुंच गया। यद्यपि वे पिता कि हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया था किन्तु वह शक्तिशाली शासक साबित हुआ। उसने कोशल, वज्जि संघ अवन्ति राज्य पर विजय प्राप्त किया। आजातशत्रु ने अपनी राजधानी राजगृह का दुर्गीकरण करवाया था। आजातशत्रु जैन धर्मावलम्बी था। उसने वैशाली कि यात्रा किया था जहाँ वे महावीर स्वामी के दर्शन किये थे लेकिन बाद में चलकर वे महात्मा बुद्ध के भी अनुयायी हो गये। राजगृह में उसने स्तूप का निर्माण करवाया। उसके शासन काल में प्रथम बौद्ध संगीति आयोजित हुई। आजातशत्रु 32 वर्षों तक शासन किया। उसके राज्य में मगध, अंग, वैशाली और काशी सम्मिलित था।

आजातशत्रु के उत्तराधिकारी उदयन थे। उसने गंगा तट पर नई राजधानी स्थापित किया जिसका नाम पाटलिपुत्र रखा गया। उसने 16 वर्षों तक शासन किया। उदयन के उत्तराधिकारी कमजोर निकले अतः अंतिम राजा नागदसक को हटाकर अमात्यों ने शिशुनाग को राजा बनाया जो बनारस के राजा थे

MARCH 2019

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

शिशुनागवंश :- शिशुनाग लिच्छवी राजा और नगर शोभनी का पुत्र था। शिशुनाग ने प्रद्योतों कि शक्ति को नष्ट किया। उसने अवन्ति को मगध साम्राज्य में मिला लिया। इससे मगध को समस्त उत्तर भारत में श्रेष्ठता स्थापित हो गया। इसकी मृत्यु 394 ई० पू० में हुई। शिशुनाग का उत्तराधिकारी उसका पुत्र कालाअशोक हुआ और कालाअशोक के मृत्यु के बाद उस दस पुत्रों ने सम्मिलित रूप से 24 वर्षों तक शासन किया। आपसी कलह ने शिशुनाग के दस पुत्रों को कमजोर बना दिया। अतः कमजोरी कि फायदा उठाकर महापद्मनन्द ने शिशुनाग वंश को समाप्त कर नन्द वंश कि स्थापना की।

पुराणों में नन्द राजा को शूद्रागर्भोद्भव कहा गया है अर्थात वह नापित पिता तथा शूद्रा माता का पुत्र था। उसका पिता एक गरीब सिपहसालार था जो अपने राजा के कृपा पात्र थे किन्तु नन्द ने विश्वासघात करके अपने आश्रयदाता राजा का ही वध कर दिया और स्वयं राजा बन बैठा। महापद्मनन्द, अत्यन्त शक्तिशाली राजा थे और उनमें उच्चकोटि की सैनिक प्रतिभा थी पुराणों में उसे एकछत्र, सर्वक्षत्रान्तक, भार्गव आदि की संज्ञा दिया गया है। उसने पौरव, इक्ष्वाकु, पांचाल, कुरु, हैहय, कलिंग, सुरसेन मिथिला, अश्मक आदि राज्यों पर विजय प्राप्त किया और मगध में इतिहास में अपना वंश का नाम रोशन किया। मगध कि सीमा गंगापार करके पंजाब में व्यास नदी तक विस्तृत हो गई भारत का ऐसा प्रथम सम्राट था जिसने उत्तर भारत के अधिकांश क्षेत्रों पर अपना विजय प्राप्त किया। नन्द राजा ने कलिंग पर भी आक्रमण किया था तथा वहाँ एक नहर का निर्माण करवाया। उसने गोदावरी के तट पर नौ नन्द देहरा नामक एक नगर बसाया महापद्म का शासन काल 28 वर्षों का था। उसके बाद उसके आठ पुत्रों ने शासन किया। अंतिम राजा धननन्द था। वह जैन धर्म का अवलम्बी था। 322 ई० पू० में नन्द वंश को समाप्त कर चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वंश कि स्थापना की और मौर्य वंश का शासन प्रारम्भ हुआ।